

Shri Shiv Chalisa PDF in Marathi

॥ दोहा ॥

गणेशाचा जयजयकार करा ।
मंगल मुल सुजन ॥
कहात अयोध्या दास ।
तूं दे अभया वरदान ॥

जय गिरिजा पति दिनदयाला ।
सदा करित संतां प्रतिपाला ॥
भला चंद्रमा सोहत नायके ।
कानन कुंडल नागफणी के ॥



अंगा गौर शिरा गंगा बहये ।
मुंडमाला तन छरा लागे ॥
वस्त्र खला बाघंबर सोहन ।
छावी को देखा नागा मुनि मोहेन ॥

मैना मातु की हवाई दुलारी
वामा अंगा सोहत छवी न्यारी ।
करा त्रिशूल सोहत छवी भरी
करित सदा शत्रुं छायाकरी
नंदी गणेश सोह तंव कैसे ॥

सागर मध्य कमल हैं जैसे ।
कार्तिक श्याम और गण राव ॥
तुम्हाला काय हवे आहे?
दैवें जबही जया पुकारा ॥

देव तुम्हाला आशीर्वाद देईल ।
किया उपद्रव तारक भरी ॥
देवें सब मिली तुम्हा जुहारी ।
तुराता षडानाना आपा पठायो ॥

लव निमेष माही मारी गिरायौ ।
आपा जालंधर असुर संहारा ॥
सुयश तुम्हारा विदित संसारा ।
त्रिपुरासुर सना युधा मचाई ॥

सर्व कृपाकार लीना बचाई ।
किया तपहीं भगीरथ भरी ॥
पुरही प्रतिज्ञा तसु पुरारी ।
दर्प चोद गंगा थाब आयी ॥



सेवक अस्तुती करीत सदाहीं ।
वेद नाम महिमा तव गाई ॥
अकथा आनंदी भेद नाही पै ।
प्रगती उदधी मंतन ते ज्वाला ॥

जरे सुरा-सुर भाये बिहाला ।
महादेव थाब करी सहाय्य ॥
नीलकंठ तब नाम कहाई ।
पूजन रामचंद्र जब किन्हा ॥

जिती के लंका विभीषण दीन्ही ।
सहस कमल में हो रहे धरी ॥
किन्हा परिक्षा तबहीं पुरारी ।
एक कमल प्रभू ॥

कुशल-नैन पूजन चाहें सोई ।
काहीं भक्ती प्रभू शंकर पाही ॥
भाये प्रसन्न दिये-इच्छित वर ।
जय जय जय अनंत अविनाशी ॥

करीत कृपा सबके घाट वासी ।
दुष्ट सकळ नित मोहीं सटवाई ॥
ब्रह्मत राहे मन चैन न आवई ।
त्राही-त्राही में नाथ पुकारो ॥

याही अवसर मोही अन उबारो ।
लै त्रिशूल शत्रुं को मारो ॥
संकट से मोहिन आना उबारो ।
माता पिता भारत सब होई ॥

संकट पुरुष पुच्छत नाही कोई ।
स्वामी एक आहे आशा तुम्हारी ॥
आई हरहु अब संकट भरी ।
धन निर्धन को देता सदाहीं ॥



आरत जान को पीर मिताई ।
अस्तुती म्हणा विधी कराई तुम्हारी ॥
शंभुनाथ अब टेक तुम्हारी ।
धन निर्धन को देता सदा ही ॥

जो कोई जांचे सो फला पाहीन ।
अस्तुती म्हणा विधी करोन तुम्हारी ॥
क्षमाहु नाथा आबा चुका हमारी ।
शंकर हो संकट के नाशन ॥

विघ्न विनाशन मंगल करण ।
योगी याती मुनि ध्यान लावावां ॥
शरद नारद शिळा नवावें ।
नमो नमो जय नमः शिवाय ॥

सुर ब्रह्मादिक पर न पाय ।
जो या पाठ करई मन लाय ॥
शंभू सहाय कोणाला ।
रिणियां जो कोणी हो अधिकारी ॥

पाठ करई सो पवन हरी ।
पुत्र-हिन इच्छा कर कोई ॥
निश्चया शिव प्रसाद तेहीं होई ।
पंडित त्रयोदशी को लावाई ॥

ध्यान-पूर्वक होम करावई ।
त्रयोदशी व्रत करे हमेशा ॥
तन नाहीं घ्या रहे कलेशा ।
धुपा दीपा नैवेद्य चढावे ॥

शंकरा सममुख पाठ सुनावे ।
जन्म जन्म के पाप नसावे ॥
अंत धमा शिवपुरा पुरुष पावे



॥ दोहा ॥

नित्य नेम करी प्रताही ।
पाठ कराळ चालीस ॥
तुम मेरी मन कामना ।
पूर्ण कराहु जगदीशा ॥

॥ ही शिव चालिसा आहे ॥

shrishivchalisa.com